7

कुछ अनुभव पढ़ने-पढ़ाने के

पद्मा यादव*

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का मूल उद्देश्य केंद्र तथा राज्य सरकारों को विद्यालयी शिक्षा के संबंध में गुणवत्ता सुधार के लिए आवश्यक सलाह देना तथा अकादमिक सहायता देना है। इस संबंध में परिषद् द्वारा शोध, विकास, प्रशिक्षण तथा विस्तार संबंधी कार्यक्रम प्रतिवर्ष किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों को और अधिक वास्तविक तथा आवश्यकता आधारित बनाने के लिए संस्था ने यह निर्णय लिया कि संस्था का प्रत्येक अकादमिक सदस्य तीन माह के लिए किसी ऐसे विद्यालय में कार्य करेगा, जहाँ संस्था द्वारा बनाई गई पाठ्यपुस्तकों या शैक्षिक दृष्टिकोण का प्रयोग होता हो ताकि इस अनुभव का लाभ संस्था की विभिन्न गतिविधियों के लिए किया जा सके।

इस उद्देश्य को ध्यान में रख कर लेखिका ने सिकंदरपुर घोसी गाँव, हरियाणा के प्राथमिक विद्यालय का चुनाव किया। गाँव में एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय है तथा एक उच्च माध्यमिक विद्यालय है। इनके साथ-साथ गाँव में पाँच आँगनवाड़ी हैं।

लेखिका प्रारंभिक बाल-देखभाल एवं शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है। अत: लेखिका ने फील्ड विज़िट के दौरान प्राथमिक कक्षाओं – कक्षा एक और दो में पढ़ाने के साथ-साथ गाँव में पाँच आँगनवाड़ियों में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का क्रियान्वयन कैसे होता है, यह समझने का भी प्रयास किया। साथ ही बच्चों को पढ़ाने एवं उनके लिए खेल-क्रियाएँ स्वयं आयोजित कर यह समझने का प्रयास भी किया कि अध्यापिकाओं को किन-किन समस्याओं का सामना करना होता है। साथ ही यह भी देखना चाहा कि बच्चे कैसे सीखते हैं?, क्या खेल-क्रियाओं के माध्यम से पढ़ाने में मुश्किल होती है? और क्या इन खेल-क्रियाओं का लाभ होता है? आदि।

रोज़ सुबह विद्यालय पहुँचना, विद्यालयी गतिविधियों में भाग लेना, शिक्षण कार्य करना, बच्चे कैसे सीखते हैं, इसकी समझ विकसित करना जहाँ दैनिक उद्देश्य बन गया था, वहीं पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की ज़रूरत भली-भाँति समझ आ रही थी। वैसे गाँव में पाँच स्कूल थे पर, ना तो अभिभावकों में और ना बच्चों में शैक्षिक गतिविधियों के प्रति कोई उत्साह और उमंग नज़र आ रहा था। लेखिका ने जब विद्यालय

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

में पढ़ाने जाना शुरू किया, उस समय बच्चों का विद्यालय में प्रवेश प्रारंभ था। कुछ बच्चों ने तो अप्रैल माह में ही प्रवेश ले लिया था और ग्रीष्म अवकाश से पहले विद्यालय में डेढ़ महीना व्यतीत कर चुके थे।

जो बच्चे कक्षा में थे उनमें से कुछ स्कूल की पोशाक में थे और कुछ घर के कपड़ों में थे। पूछे जाने पर पता चला, जो पहली खेप में सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के तहत चीज़ें आई थीं जैसे – कपड़े, कॉपी, किताबें, पेंसिल, रबर, जूते-मोज़े इत्यादि, वे चीज़ें उपस्थित बच्चों को बाँट दी गईं और जिन्होंने अभी प्रवेश लिया है उन्हें बाँट दी जाएँगी।

दुखद यह था कि बच्चों और अभिभावकों को उन चीज़ों को सही तरीके से इस्तेमाल करने की समझ नहीं दिखी। अध्यापक भी चीज़ों को लेकर सतर्क नज़र नहीं आए। अध्यापक न तो बच्चों को बैग में सही ढंग से कॉपी, किताबें, पेंसिल, रबर, कलर पेंसिल इत्यादि को रखकर, विद्यालय में रोज़ सही ढंग से लाने पर ज़ोर दे रहे थे और न ही वे कॉपी-किताबों को कक्षा में ही रखकर रोज़ाना बच्चों के साथ उन चीज़ों का सही प्रयोग कर रहे थे। किताबों का पूर्ण सेट तो बच्चों को बाँटते हुए देखा गया परंतु कॉपी एक ही दी जा रही थी, उस कॉपी में सौ पन्ने थे। कॉपी तीन भागों में बँटी हुई थी, कुछ पन्ने हिंदी, कुछ अँग्रेज़ी एवं कुछ गणित का काम करने के लिए थे। पूछे जाने पर मालूम हुआ कि जब यह भर जाएगी तो विद्यालय की ओर से और दे दी जाएगी। परंतु तीन महीने में लेखिका को कॉपी भरते हुए नहीं दिखा, बल्कि यह ज़रूर देखा गया कि बच्चों की कॉपी फट गई है, खो गई है और ज़्यादातर समय यह पाया गया कि बच्चे उसे घर पर ही भूल जाते थे। घर से कॉपी ले आऊँ, ऐसा कह कर विद्यालय से निकल जाना चाहते थे।

तीन दिन अवलोकन करने पर लेखिका ने पाया कि जो बच्चे पहले आँगनवाड़ी जा चुके थे, वे फिर भी कुछ हद तक अपनी चीज़ें सँभालते थे और कक्षा में आगे बैठने का प्रयास करते थे परंतु जो सीधे घर से आए थे वे कक्षा में समायोजित होने में समय ले रहे थे। इसके अनेक कारण थे जिनमें से एक कारण यह भी पाया गया कि प्रवेश लेने के पंद्रह दिनों तक भी अध्यापिका ने उन्हें न कोई कॉपी-किताब दी और न ही यूनिफॉर्म। अध्यापिका यह सुनिश्चित कर लेना चाहती थी कि ये बच्चे विद्यालय नियमित रूप से आएँगे या यूँ ही प्रवेश लेकर घर बैठ जाएँगे। परंतु आश्चर्य तब हुआ जब माता-पिता ने भी अपने बच्चों को स्कूल के लिए कॉपी, पेंसिल नहीं दी और स्कूल से इन चीज़ों के मिलने का इंतज़ार करते रहते थे।

स्कूल की सही शुरुआत के लिए जितना ज़रूरी है बच्चे का तत्पर होना, उतना ही ज़रूरी है बच्चों के समायोजन के लिए कक्षा का वातावरण या स्कूल का वातावरण तैयार करना। कक्षा की चीज़ों का सही रख-रखाव एवं बढ़िया कक्षा-कक्ष संचालन।

कक्षा एक और दो में किस प्रकार की गतिविधियाँ कराई जाएँ, इसके लिए प्रथम छह सप्ताह की गतिविधियों का ब्योरा, सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के तहत शिक्षा विभाग द्वारा दिया गया था। परंतु उसके महत्त्व को कक्षा एक और दो की अध्यापिकाओं ने ठीक से समझा नहीं। उस मॉड्यूल में स्कूल तत्परता हेतु गतिविधियाँ दी गई थीं। मगर उससे संबंधित अध्यापिकाओं को कोई प्रशिक्षण

नहीं दिया गया था, जिसके कारण वे मॉड्यूल में दी गई गतिविधियों को ठीक से समझ नहीं पा रही थीं और न ही ये जान पाई थीं कि ये गतिविधियाँ क्यों दी गई हैं? किन कारणों से कराई जानी चाहिए? स्कूल तत्परता संबंधित गतिविधियाँ खेल-खेल में बच्चों को विद्यालय में समायोजन के लिए तैयार करती हैं ताकि उनका विद्यालय में ठहराव बना रहे और वे स्कूल छोड़कर जाएँ नहीं। साथ ही वे पढ़ने, लिखने और गणित सीखने के लिए तैयार हो जाएँ और विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों में भाग लें और आनंद की अनुभूति कर सकें।

वर्ष की शुरुआत में जब बच्चा अपना घर छोड़कर विद्यालय आता है तब यह ज़रूरी होता है कि वह अपने आप को सुरक्षित महसूस करे और विद्यालय के वातावरण के अनुरूप अपने आप को समायोजित करे। अत: अध्यापिकाओं की अहम ज़िम्मेदारी बन जाती है कि वे कक्षा-कक्ष का ऐसा वातावरण तैयार करें जिसमें कि बच्चे आसानी से समायोजित हो जाएँ।

कक्षा एक और दो में समायोजन की गतिविधियों का सबसे अधिक महत्त्व है क्योंकि इस समय इन गतिविधियों का उद्देश्य होता है – प्राथमिक विद्यालय में समायोजन में मदद, बच्चे बिना किसी तनाव के माता-पिता/अभिभावकों से अलग हो सकें, बच्चों में सामूहिक क्रियाओं में रुचि लेने की क्षमता विकसित हो। अत: लेखिका ने कक्षा एक के बच्चों को समायोजन में सहायता देने हेतु बहुत-सी खेल क्रियाओं का आयोजन किया। इन गतिविधियों के आयोजन में कक्षा एक की अध्यापिका की भागीदारी भी सुनिश्चित की। इसके साथ ही कक्षा के क्रियाकलापों की योजना आनंददायक और रोचक बनाई। गतिविधियाँ ऐसी चुनीं जो कि बच्चों को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करती थीं तथा बच्चों के विकास के लिए ज़रूरी थीं। जैसे-चलो सभी बच्चे एक-दूसरे की कमर पकड़ कर रेल बनाओ। हम गोल दायरे में घूमेंगे और गाना गाएँगे –

'बच्चों की ये रेल है
नाम बताओ खेल है
छुक-छुक, छुक-छुक करते जाओ
गाड़ी में तुम जुड़ते जाओ...'

जो बच्चा आता उसे अपना नाम बताकर रेल-गाड़ी में जुड़ना होता।

इस तरह की गतिविधियों को करवाते हुए लेखिका ने यह पाया कि बच्चे इस तरह की गतिविधियों में बहुत आनंद लेते हैं। बच्चे खुशी-खुशी अपना नाम बताकर खेल में शामिल हो जाते थे। ऐसे बहुत से खेल लेखिका ने बच्चों को करवाए। इससे बच्चे न केवल एक-दूसरे के नामों से परिचित हो गए, बल्कि कुछ ही देर में आपस में मिल-जुल कर खेलने और खाने लगे थे।

धीरे-धीरे लेखिका और कक्षा एक की अध्यापिका ने मिलकर बच्चों में अच्छी आदतों को विकसित करते हुए गतिविधियाँ आयोजित करना शुरू किया, जैसे – खाने से पहले और बाद में हाथ धोना, साफ़-सुथरे होकर विद्यालय आना, शौचालय का सही प्रयोग करना, रोज़ दाँत-साफ़ करना, कूड़ा-कचरा कचरा-पेटी में डालना, विद्यालय में नियमित रूप से आना, अपने बैग में पानी की बोतल सँभालना,

चप्पल, जूतों को सही जगह पर रखना, दरी पर सही ढंग से बैठना इत्यादि। बच्चों तक सार्थक संदेश पहुँचे इसके लिए कहानियों, गीतों और कठपुतलियों के खेलों को चुना गया।

बच्चों में पहल करने, स्वाधीनता तथा नेतृत्व के गुणों का विकास होना ज़रूरी है। अत: बच्चों को खेल क्रियाओं के माध्यम से 'कौन-सा खेल खेला जाए' इसका चुनाव करने को प्रोत्साहित किया गया। इससे निर्णय लेने के साथ-साथ उनकी मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता है। बच्चों को कॉपी, किताब, रंग, वर्कशीट बाँटने की ज़िम्मेदारी दी गई। बच्चे कक्षा में सामान लाते और रखते थे, कई बार कमरे को व्यवस्थित करने में मदद करते थे। रजिस्टर स्टाफ़ रूम से लाते और रखते भी थे। ये मौके बच्चों को जान-बूझ कर दिए जाते थे। बच्चे इन छोटे-छोटे कार्यों को करके अपने को महत्वपूर्ण और ज़िम्मेदार समझते थे। दिन में कई बार बच्चों को बारी-बारी से समूह के सामने आगे आकर अकेले कुछ-न-कुछ करने, सुनाने या लिखने इत्यादि का मौका दिया जाता था। कभी-कभी बच्चों से पूछा भी जाता था कि आपमें से कौन करना चाहेगा। यह देखा गया कि ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चे हाथ उठाकर कार्य को कर दिखाना चाहते थे।

प्रार्थना सभा में अब कक्षा एक के बच्चों ने आगे आकर समूह में कोई न कोई कविता, बालगीत गाना शुरू कर दिया था। जिससे दूसरी कक्षाओं के बच्चे भी प्रभावित हो रहे थे और उन्होंने भी प्रार्थना-सभा में अपनी रुचि दिखानी शुरू कर दी थी। धीरे-धीरे अन्य कक्षाओं में भी कार्यक्रम तैयार कर प्रदर्शन करना आरंभ कर दिया। इससे बच्चे समय पर स्कूल आने लगे।

कक्षा में उपस्थिति जाँचने के लिए हमने नये-नये तरीके खोजे। बच्चों से कार्ड पर एक तरफ़ उनका नाम लिखवाया और दूसरी तरफ़ कोई भी चित्र बनवाया या चिपका दिया था, जैसे-फूल, पत्ती, गेंद, पेन इत्यादि। बच्चे कार्ड पर लिखे अपने नाम को पलट देते थे जिससे मालूम हो जाता था कि कौन आया है और कौन नहीं। कितने बच्चे उपस्थित हैं और कितने अनुपस्थित।

दैनिक कार्यक्रम के अंतर्गत लेखिका और शिक्षिका ने मिलकर दैनिक कार्यक्रम में शारीरिक एवं मांसपेशियों के विकास के लिए अनेक क्रियाएँ शामिल कीं, जैसे-दौड़ने, कूदने, खिसकने, रेंगने, लुढ़कने-उछलने, झूलने; लयात्मक क्रियाएँ–गेंद खेलना, रिंग फेंकना, रस्सी कूदना, रस्सी के नीचे से निकलना और ऊपर से निकलना इत्यादि।

सूक्ष्म मांसपेशियों को विकसित करने हेतु बच्चों से कागज़ मोड़कर छल्ले बनवाएँ और फिर उनको धागे में पिरोकर माला बनवाई, मैगज़ीन में से चित्र काटकर/फाड़कर चिपकाने का कार्य बच्चों को दिया, चित्रकारी करने, रंग भरने, छपाई का काम बच्चों को करने को दिया गया, कागज़ मोड़कर फूल, नाव, जहाज़ बनवाया, बालू पर या गीली मिट्टी पर अक्षर लिखवाए, छाँटने की क्रिया, नमूना बनाने की क्रियाएँ अपने दैनिक कार्यक्रम में शामिल कीं।

शुरुआत में बच्चों को भाषा सिखाने हेतु सचित्र पुस्तकें उलटने-पुलटने को दी गईं। बच्चों को कहानियाँ पढ़कर सुनायीं। विद्यालय में सुबह नौ

बजे से ग्यारह बजे तक दूरदर्शन पर बच्चों के लिए कार्यक्रम आया करता था जो सभी बच्चे देखते थे। बच्चे जो कोई कहानी या नाटक दूरदर्शन पर देखते थे, लेखिका कक्षा में उस पर चर्चा किया करती थी। चूँकि बच्चे अलग-अलग भाषा घर में बोलते थे और विद्यालय या आस-पास के लोग हिंदी में बात करते थे इसलिए भाषा सिखाना एवं तत्संबंधी गतिविधियों को आयोजित करना एक बड़ी चुनौती बन गया था। बच्चों को पढ़ना सिखाना भी कठिन हो रहा था। यह देखते हुए अब फील्ड विजिट का लक्ष्य बन गया था – बच्चों में सुनने के कौशल विकसित करना, शब्द भंडार विकसित करना, मौखिक अभिव्यक्ति विकसित करना, लिखने की तैयारी करवाना। इन्हीं को दृष्टिगत रखते हुए बहुत से खेल तथा गतिविधियाँ की गईं।

दृश्य विभेदीकरण हेतु बच्चों को कई वर्कशीट दी गईं जिनमें बच्चों को एक जैसी दिखने वाली चीज़ों का मिलान करना होता था। दो एक जैसे दिखने वाले चित्रों में केवल एक भिन्नता को पहचानने की क्रिया बच्चों से करवाई गई। अपना लिखा हुआ नाम पहचानने की क्रियाएँ, विभिन्न रंगों के मोतियों की माला बनाना आदि।

बेमेल को ढूँढना

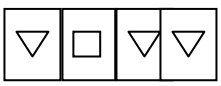

दो ऐसे चित्र तैयार किए गए जिसमें केवल एक भिन्नता थी। बच्चों को उस भिन्नता को ढूँढना था।

बिंदियों के अभिकोण तैयार किए और बच्चों को मिलान करने को कहा गया –

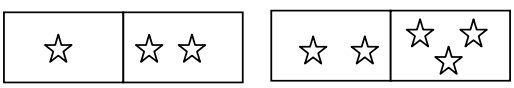

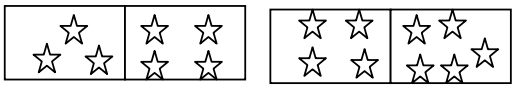

ऐसी तमाम क्रियाएँ बच्चों के साथ खेल-खेल में की गईं।

सुनने और देखने में साहचर्य स्थापित करने हेतु लेखिका ने बच्चों को निम्नलिखित गतिविधियाँ करवाईं, जैसे – प्रथम ध्वनि के आधार पर चित्रों का वर्गीकरण करना।

'प' ध्वनि से शुरू होने वाले चित्रों को छाँटना।

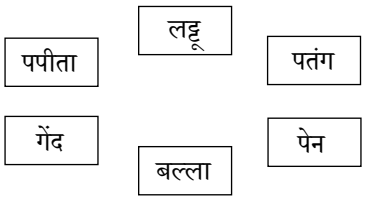

ध्वनि और अक्षरों का मिलान करना। बहुत-सी वस्तुओं के चित्र अध्यापिका ने अलग-अलग कार्डों पर चिपकाए थे। इसके साथ ही अक्षरों के कार्ड भी बनाए थे। 'प' ध्वनि सुनते ही बच्चों को 'प' का कार्ड उठाना होता था। अगर बच्चा एक ही कार्ड उठाता था तो लेखिका बच्चे को और देखने के लिए प्रोत्साहित करती थी।

इसी तरह प्रथम और अंतिम ध्वनि की क्रियाएँ करवाते समय बच्चों को अक्षरों से परिचित करवाने की कोशिश की गई ताकि बच्चे लिखित प्रतीकों का ध्वनियों से साहचर्य करना सीख लें।

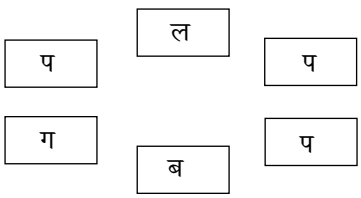

बच्चों से चित्र व शब्द को मिलान करवाने हेतु लेखिका ने कक्षा एक की अध्यापिका के साथ ऐसे कार्ड बनाए, जिसमें वस्तु के शब्द और चित्र दोनों दिए गए थे। फिर उन्हें इस प्रकार काटा कि बच्चे मिलान कर उन्हें फ़िट बैठा सकें।

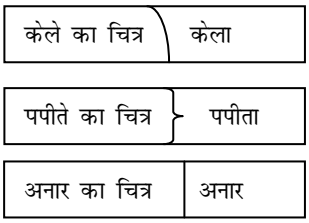

इन सभी कार्डों को आपस में मिलाकर बच्चों को खेलने के लिए दिया गया। ये टुकड़े तभी आपस में फ़िट होते थे जब वे सही होते थे। अन्यथा उन्हें और ढूँढना पड़ता था। लेखिका ने पाया कि बच्चे स्वयं ही अपनी गलती का पता लगाकर उसे सुधार रहे थे और खेल-खेल में सीख भी रहे थे।

पर्यावरण संबंधी (प्राकृतिक पर्यावरण, भौतिक पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण संबंधी) संबोध बच्चों में विकसित करने के लिए साप्ताहिक 'थीम' का चुनाव कर अनेको क्रियाएँ उसी थीम के चारों ओर विकसित कर, उनका क्रियान्वयन किया गया, जैसे – फल-सब्ज़ियाँ, हमारे परिवहन, हमारे समुदाय के सदस्य (डाकिया, डॉक्टर, माली इत्यादि), मौसम, हमारे त्योहार, सुरक्षा, पानी, जानवर इत्यादि । खेल-खेल में सीखते-सिखाते अनेक अनुभव प्राप्त हुए जो बच्चों में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाते हैं।

शिक्षकों की भूमिका

लेखिका ने यह पाया कि इस तरह की गतिविधियों को कराने में शिक्षक की भूमिका अहम होती है। शिक्षिका को चाहिए कि बच्चों के प्रति सकारात्मक और स्नेहपूर्ण व्यवहार करें। बच्चों की प्रशंसा खुलकर करें। यदि कोई बच्चा किसी कार्य को अच्छी तरह करता है या सही उत्तर देता है तो अन्य बच्चों से उसके लिए ताली बजवाएँ। अध्यापिका का व्यवहार ममतापूर्ण हो। बच्चे से शिक्षक अगर दिन में एक बार प्यार से बात कर लेता है तो बच्चा कक्षा में अपने आप को सहज महसूस कर लेता है। बच्चा बहुत शांत या शर्मीला हो या अत्यधिक आक्रामक रुख अपनाने वाला हो तो उसे आगे अपने पास ही बिठाएँ। शिक्षक बच्चे के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण न रखें। बच्चों के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तत्पर रहें और बच्चे जो कुछ भी कहें उसे धैर्यपूर्वक सुनें। शिक्षक को स्वयं वैसा बनना होगा, जैसा वह बच्चों को बनाना चाहती है।

निष्कर्ष

सभी बच्चों में सीखने की क्षमता होती है। बच्चों को यदि मन लगाकर, खेल क्रियाओं के माध्यम से अध्यापक पढ़ाए तो बच्चे ज़रूर सीखते हैं।

लेखिका ने यह अनुभव किया कि जो बच्चे पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का अनुभव लिए होते हैं वो आसानी से अपने आप को समायोजित कर लेते हैं, परंतु जो सीधे घर से आते हैं उनको समायोजित होने में थोड़ा समय लगता है।

समायोजन में सहायक क्रियाएँ करवाने पर पाया गया कि बच्चे कक्षा में समायोजित हो गए थे। वे

पढ़ने-लिखने की गतिविधियों के लिए तैयार हो गए थे। बच्चे रोज़ाना समय पर विद्यालय साफ़ कपड़ों में, नहा-धोकर, नाखून काटकर आने लगे थे। सभी अपना बस्ता और किताब सँभालना सीख गए थे। पेंसिल और रबर लाने लगे थे।

पढ़ने, लिखने और गणित की तैयारी हेतु गतिविधियाँ सहायक सिद्ध हुईं। बच्चे हिंदी एवं अंग्रेज़ी के अक्षर पहचानने लगे थे। ध्वनि सुनकर शब्द बना लेते थे। दो अक्षर, तीन अक्षर जोड़कर पढ़ने लगे थे। कहानी गढ़ लेते थे, पहेलियाँ पूछ लेते थे। गणित की संख्या पहचान लेते थे एवं उनका मान बता देते थे। बच्चों को जोड़ना-घटाना आने लगा था। वे चित्र बना लिया करते थे, बच्चे दिए गए चित्र में आसानी से रंग भर लिया करते थे।

बच्चे त्योहारों के महत्त्व को समझने लगे थे। कक्षा की साफ़-सफ़ाई पर ध्यान देने लगे थे। अपनी बात को सफ़ाई से दूसरों के सामने रखने लगे थे।

सुझाव

प्राथमिक विद्यालयों में हर त्योहार मनाया जाना चाहिए। बच्चे स्कूली कार्यक्रम में नित्य प्रति परिवर्तन होने से आनंद का अनुभव करते हैं। नवीन अनुभव पाकर उनकी चिंतन प्रक्रिया, कल्पनाशक्ति, शब्द भंडार और सौंदर्य अनुभूति को बढ़ावा मिलता है। स्कूल के बड़े बच्चों को त्योहार मनाने की व्यवस्था करने तथा सजावट आदि में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर देना चाहिए।

बाल्यकाल से ही लोग लड़के-लड़कियों से अलग-अलग भूमिकाओं और व्यवहार की अपेक्षा करने लगते हैं। शिक्षिकाओं को यह प्रयास करना चाहिए कि इस प्रकार का भेदभाव न पनपने पाए। उन्हें यह नहीं कहना चाहिए कि लड़के रोते नहीं हैं या लड़कियों को कूद-फाँद नहीं करनी चाहिए, आदि। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि लड़के और लड़कियों दोनों को एक ही प्रकार के काम करने का अवसर मिले।

कक्षा में विज्ञान का कोना बनाया जाना चाहिए। उसमें बच्चों द्वारा उगाए गए पौधों, मैगनीफाइंग शीशा, चुंबक और पर्यावरण से बच्चों द्वारा संग्रह की गई विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को शामिल करना चाहिए।

कक्षा में एक पढ़ने का कोना बनाया जाना चाहिए। जहाँ बच्चों की आयु एवं रुचि के अनुसार किताबें, बच्चों की पहुँच में रखी जानी चाहिए।

जानने और समझने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चे इन्हीं के माध्यम से सीखते हैं। बच्चों के इंद्रियजन्य अनुभवों में जितनी विविधता होगी उनका उतना ही विस्तार होगा। संसार को देखने और समझने का उन्हें उतना ही व्यापक आधार मिल सकेगा।

जहाँ तक संभव हो बच्चों का स्वागत और प्रार्थना सभा हो जाने के बाद बच्चों के साथ मुक्त वार्तालाप को कक्षा की पहली क्रिया बनाना चाहिए। वार्तालाप की क्रिया द्वारा बच्चों को अपनी बातें कहने और अपने अनुभव बाँटने का अवसर मिलता है। संतुष्ट होने पर बच्चे अन्य क्रियाओं में भाग लेने के लिए तैयार हो जाते हैं।

शिक्षिका को हर बच्चे को बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर बच्चे को बोलने का अवसर मिले। किसी-किसी दिन यह क्रिया पूरी तरह स्वतंत्र हो सकती है। किंतु कभी-कभी शिक्षिका बच्चों को पहले से निर्देश दे सकती है कि वे शाला में अपने किसी प्रिय खिलौने के बारे में बोलने की तैयारी करके आएँ और अपने प्रिय खिलौने को सभी बच्चों को दिखाकर उसके बारे में बताएँ। बच्चों की बातों को सही तरीके से दुहरा कर बच्चों को अपनी बात आत्मविश्वास पूर्वक रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। अगर वे गलती करें तो अप्रत्यक्ष रूप से सुधार कर उसका सही रूप बच्चों के सामने रखें। उनका मज़ाक न उड़ाएँ और न ही उन्हें डाँटें।

शिक्षिका प्रोजेक्ट के लिए किसी भी विषय का चुनाव कर सकती है तथा उससे संबंधित शब्दों की सूची पहले से तैयार कर नियोजित प्रोजेक्ट क्रियाओं में उन शब्दों का प्रयोग करके बच्चों को उनसे परिचित करा सकती है।

❑❑❑